

विक्रम संवत्-२०३६, श्रावण सुद-९, मंगलवार, ता. १९-८-१९८०
 वचनामृत-१९९, २००. प्रवचन नं. १२

शुभको अटकनेके जो अनेक प्रकार हैं उन सबमेंसे विमुक्त हो और मात्र चैतन्यहरणमें ही उपयोगको लगा दे; अवश्य प्राप्ति होगी ही. अनंत-अनंत कालसे अनंत श्रुतोंने इसी प्रकार पुरुषार्थ किया है, इसलिये तू भी ऐसा कर.

अनंत-अनंत काल गया, शुभ कहीं न कहीं अटकता ही है न? अटकनेके तो अनेक-अनेक प्रकार हैं, किंतु सफल होनेका एक ही प्रकार है-वह है चैतन्यहरणमें जाना. स्वयं कहां अटकता है उसका यदि स्वयं ध्यान करे तो बराबर जान सकता है.

द्रव्यलिंगी साधु होकर भी शुभ कहीं सूक्ष्मरूपसे अटक जाता है, शुभ भावकी मिठासमें रुक जाता है, 'यह रागकी मंदता, यह अकार्षण मूलगुण,-जस यही मैं हूं, यही मोक्षका मार्ग है', इत्यादि किसी प्रकार संतुष्ट होकर अटक जाता है; परंतु यह अंतरमें विकल्पोके साथ अकृताबुद्धि तो पडी ही है उसे क्यों नहीं देखता? अंतरमें यह शांति क्यों नहीं दिजायी देती? पापभावको त्यागकर 'सर्वस्व कर लिया' मानकर संतुष्ट हो जाता है. सख्ये आत्मीयोंको तथा सम्यग्दृष्टिको तो 'अभी बहुत बाकी है, बहुत बाकी है'-इस प्रकार पूर्णता तक बहुत बाकी है ऐसी ही भावना रहती है और तभी पुरुषार्थ अर्जत रह पाता है.

गृहस्थाश्रममें सम्यक्त्वकीने मूलको पकड लिया है, (दृष्टि अपेक्षासे) सब कुछ कर लिया है, अस्थिरतारूप शाखाओं-पते जरूर सृज जायेंगे. द्रव्यलिंगी साधुने मूलको ही नहीं पकडा है; उसने कुछ किया ही नहीं. बाह्यदृष्टि लोगोंको ऐसा भले ही लगे कि 'सम्यक्त्वकीने अभी बहुत बाकी है और द्रव्यलिंगी मुनिने बहुत कर लिया'; परंतु ऐसा नहीं है. परिषद सहन करे किंतु अंतरमें कर्ताबुद्धि नहीं दूटी, आकुलताका वेदन होता है, उसने कुछ किया ही नहीं. १९९.

वचनामृत-१९९. 'शुभको अटकनेके जो अनेक प्रकार हैं...' अनादि कालसे कुछ.. कुछ.. कुछ.. शक्य गहराईमें रहता है. साक्षात् चैतन्यका आनंदका अनुभव न हो तो भी अपना मान लेते हैं, जैसे अटकनेके असंख्य प्रकार हैं. 'शुभको अटकनेके

जो अनेक प्रकार हैं उन सबमेंसे विमुक्त हो...’ आलाला..! अटकना क्या है, वह भी थोड़े विचार बिना बैठ सकता नहीं। कहां-कहां मेरी भूल हो रही है और मैं कहां अटक जाता हूँ, मैं क्या मानता हूँ? अतीन्द्रिय आनंदका ढग आत्मा है, अतीन्द्रिय आनंदका पुंज प्रभु है। अतीन्द्रिय आनंदका वेदन बिना जो बाह्य किया है, सब निरर्थक है। वहां अटक जाता है, मैं कुछ करता हूँ। प्रत पालता हूँ, ब्रह्मचर्य पालता हूँ, कुछ आचरण-किया करता हूँ, ज्ञानमें कुछ ज्ञानपना करता हूँ, जैसे अनेक प्रकारका रुकनेका कारण होता है।

प्रभु! ‘सबसे विमुक्त हो...’ ऐसा मनुष्यपना मिला, नाथ! आलाला..! अनंत कालमें मनुष्यपना मिलना दुर्लभ, उसमें जिनवाणी सुनने मिलनी मुश्किल, यह मिला है तो प्रभु! सबमेंसे विमुक्त हो। दुनियाकी बात छोड़ दे। आत्माके आनंदके अलावा कहीं भी रुकना, कहीं भी रुकनेसे मैं हूँ, ऐसी दृष्टि छोड़ दे, प्रभु! आलाला..! ‘सबमेंसे विमुक्त हो और मात्र चैतन्यदरबारमें ही...’ आलाला..! मात्र चैतन्यदरबारमें अनंत-अनंत संपदा, यमकृति पडी है, उसका वेदन कर। आलाला..! इस वेदनके बिना जन्म-मरणका अंत नहीं आयेगा। नौवीं त्रैवेयक अनंत बैर गया, द्विगंबर साधु लज्जों रानी छोड़कर शुक्ल वेश्या, बाजों बरसों तक अष्टाधिस भूलगुण, पंच महाप्रत पावे लेकिन उससे कुछ हुआ नहीं। चैतन्यमात्र दरबारमें जा, प्रभु! आलाला..! दूसरी सब बात छोड़कर चैतन्य आनंदकंद प्रभु, अतीन्द्रिय आनंदका रस (है), वहां जा।

‘चैतन्यदरबारमें ही उपयोगको लगा दे;...’ दूसरी चिंतवना छोड़ दे, दूसरी कल्पना छोड़ दे और अपना उपयोग अपने आनंदमें लगा दे। आलाला..! करना यह है। यह अनंत कालमें किया नहीं। ‘अवश्य प्राप्ति होगी ही;...’ तेरे चैतन्यदरबारमें ही उपयोग लगा दे। आलाला..! बाहरमेंसे सबमेंसे समेटकर, बाहरमेंसे चिंताका विकल्प सब प्रकारका छोड़कर चैतन्यदरबारमें उपयोग दे। आलाला..! भगवान अंदर चैतन्यदरबार है। अनंत-अनंत आनंद, अनंत शांति, अनंत प्रभुता, अनंत स्वच्छता, अनंत-अनंत गंभीर शक्तिओंका सागर है, गंभीर शक्तिओंका सागर प्रभु है। आलाला..! वहां उपयोग लगा दे। उसके बिना सब झगट होगा। भवका अभाव नहीं होगा। आलाला..!

‘चैतन्यदरबारमें ही उपयोग लगा दे...’ भाषा तो सादी है। चैतन्यका उपयोग जो बाहरमें दया, दान, प्रत, भक्ति, पूजामें रखा जाता है वह सब तो शुभभाव है, वह कोई धर्म नहीं। चैतन्यदरबारमें उपयोग लगा दे। वहां अकेला आनंद और शांति भरी है। आलाला..! ‘अवश्य प्राप्ति होगी ही.’ प्रभुमें-परमात्मामें दृष्टि लगी,

उपयोग लगा, ज़रूर प्राप्ति होगी. निःसंदेह प्राप्ति होगी. दूसरे कोई प्रकारसे प्राप्ति नहीं होगी.

‘अनंत-अनंत कालसे अनंत ज़वोंने ईसी प्रकार पुरुषार्थ किया है,...’ ईसी प्रकार पुरुषार्थ किया. अतीन्द्रिय ज्ञान और आनंद उसमें उपयोग लगा दिया, ऐसी पुरुषार्थ अनंत ज़वोंने किया. और वर्तमानमें कर सकते हैं. प्रभु! यह कर ना. आलाला..! ‘अनंत-अनंत कालसे अनंत ज़वोंने ईसी प्रकार पुरुषार्थ किया है, ईसलिये तू भी ऐसा कर.’ अनंत ज़व यह कर सके हैं. अशक्य है ऐसा नहीं है. दुर्लभ है. उपयोग लगा है अंदरमें आनंदमें. अनंत आनंद प्राप्त होगा. अनंत ज़व मोक्षको प्राप्त हुआ है. सब अंतर्मुख आनंदमें उपयोग लगाकर मोक्षको प्राप्त हुआ है. दूसरी कोई क्रियाकांडसे हुआ नहीं.

‘अनंत-अनंत काल गया, ज़व कहीं न कहीं अटकता ही है न?’ आलाला..! अनादि अनंत कालमें अनंत ज़ैर साधुपना लिया, पंच महाव्रत लिये, अष्टाईस मूलगुण लिये उसमें कोई आत्मा नहीं है. आला..! ‘अटकनेके तो अनेक-अनेक प्रकार हैं; किन्तु सबल होनेका एक ही प्रकार है...’ आला..! चैतन्य भगवान, उसके दरबारमें प्रवेश करना, उसका ही अनुभव करना, यह एक ही सङ्कलताका उपाय है, बाकी सब असङ्कलताके हैं. आलाला..! ‘यह है चैतन्यदरबारमें जाना.’ एक ही प्रकार है, ‘यह है चैतन्यदरबारमें जाना.’ भगवान चैतन्यदरबार. आलाला..! बाहरमें भी दरबारके पास जाते हैं तो कितनी योग्यता होती है. देखा है न. लिंबडी है, लिंबडी. रानीके पास जाय तो कपडा बांधे. जैसे ही नहीं जाते. जैसे ही घोंती पहनकर नहीं जाते. घोंती पर कपडा बांधकर फिर जाते हैं. हमने बहुतोंको प्रत्यक्ष देभे हैं. व्याख्यानमें आये थे दरबार, रानी आयी थी. रानी तो वहां राजकोटमें आयी थी. भाई! राजकोट आयी थी न? व्याख्यानमें. बंद किया होता है. राजकोटकी रानी आयी थी. उनके पास जानेमें भी सभ्यता चाहिये. जुद्धे कपडे पहनकर नहीं जा सकते. अच्छी घोंती पहनकर चारों ओरसे बंद कपडे पहनकर जाते हैं.

यहां आत्म-दरबारमें जाना है. आलाला..! वहां तो सब विकल्पाटिका त्याग करके कुछ भी आत्मश्लाघा-अपनी आत्मप्रशंसा करके रुकना, यह सब छोड दे, प्रभु! आलाला..! उसे छोडकर.. आला..! ‘चैतन्यदरबारमें जाना. स्वयं कहां अटकता है...’ मुद्देकी रकमकी बात है, प्रभु! थोडी सूक्ष्म लगे, लेकिन मूल रकम है. बलिनके साथ बात करते हुआ स्वयं बोले हैं. यह तो कभीकभार निकले. उसमेंसे लिखा है. आनंदके अनुभवमें, अतीन्द्रिय आनंदके अनुभवमेंसे यह बात आयी है. आलाला..!

कहते हैं कि 'सकल होनेका अंक ही प्रकार है-वह है चैतन्यदरबारमें ज्ञान।' यह प्रकार. आलाला..! बाहरकी सब चित्तां, साधन, ज्योति, पूजा, वात्स, महिमा, महत्ता देखकर दुनिया तुझे बड़ा बना दे कि ओहो..! तू बड़ा है, जैसा है. अंतरमें अनुभव होवे नहीं. आलाला..! कहते हैं, अंतर दरबारमें ज्ञान. 'स्वयं कहां अटकता है उसका यदि स्वयं ज्योति करे तो बराबर ज्ञान सकता है.' आलाला..! शर्त यह. स्वयं ज्योति करे. 'स्वयं कहां अटकता है उसका यदि स्वयं ज्योति करे तो बराबर ज्ञान सकता है.' सूक्ष्म बात है, प्रभु! बहुत सूक्ष्म, बहुत सूक्ष्म. ज्ञानपनामें भी, श्रद्धामें भी कहां अटकता है, वस्तु कहां रह जाती है, उसका अटकना-रुकना किस प्रकारसे होता है, उसका विचार करनेसे ज्योतिमें आता है. आलाला..!

'द्रव्यविंगी साधु...' अनंत बैरे नश्रपना लेकर द्विगंबर हो गया. एजरो रानियां छोडी. ओहो..लो..! 'द्रव्यविंगी साधु होकर भी जव कहीं सूक्ष्मरूपसे अटक जाता है,...' आलाला..! शुभभावकी मीढासमें, शुभभाव सूक्ष्म शुभभाव महाप्रतका, ब्रह्मचर्यका, बाल ब्रह्मचारी हो, तो क्या हुआ? बाल ब्रह्मचारी कोई धर्म नहीं. बाल ब्रह्मचारी तो कायाकी क्रिया अटकी-रुकी है, आत्मा नहीं रुका है. आलाला..! बाल ब्रह्मचारी भी अनंत बार हुआ है. वह तो परलक्ष्यी शुभभाव है. आत्म-ब्रह्मचर्य.. आलाला..! ब्रह्म नाम आनंद और चर नाम चरना, आत्माके आनंदमें चरना वह ब्रह्मचर्य, कभी लिया नहीं, कभी किया नहीं, कभी रखा नहीं, कभी अंतरमें कहां रुकता है उसकी जबर नहीं. आलाला..!

'यह रागकी मंदता,...' द्विगंबर द्रव्यविंगी साधु 'शुभभावकी मीढासमें रुक जाता है, यह रागकी मंदता,...' बहुत रागकी मंदता हो गयी. मिथ्यादृष्टि. आलाला..! 'यह अष्टाईस मूलगुण...' मैं तो यह अष्टाईस मूलगुण पावता हूं. आलाला..! रागकी मंदता मेरेमें है. 'बस, यही मैं हूं...' मैंने र्तना किया, बहुत किया. पूरा संसार छोड दिया. एजरो रानी छोड दी, अरबोंकी कमाई लक्ष्मी छोड दी. उसमें क्या हुआ? आलाला..! अंतर चैतन्य भगवानके दरबारमें अनंत आनंद और अनंत शांति, जिसकी गंध अनंत कालमें अंश भी आयी नहीं. आलाला..! मुद्देकी रकम है. 'बस, यही मैं हूं...' साधु मानता है. द्रव्यविंगी साधु होकर शुभभावकी मीढासमें रुक जाता है. 'रागकी मंदता, अष्टाईस मूलगुण, बस, यही मैं हूं, यही मोक्षका मार्ग है...' उसमेंसे मार्ग निकलेगा. शुभभावमेंसे मार्ग नहीं निकलेगा. शुभभावमेंसे निकलेगा, जैसी मान्यता मिथ्यादृष्टिकी अनादिकी है. आलाला..!

'र्यत्यादि किसी प्रकार संतुष्ट होकर अटक जाता है;...' मान लेता है कि मैंने

कुछ व्यवहार तो किया. व्यवहार करते-करते निश्चय हो जायगा. आला..! सूक्ष्म व्यवहार रागकी मंदता करते-करते भी कदाचित् कल्याण हो जायगा. जैसा अनादिसे मिथ्यात्वमें रुक गया है. मिथ्यात्वका जलर बडा कठिन है. सब छोडना, वह अनंत बार छूटा. मिथ्यात्व अेक बार अेक सेकंड नहीं छूटा. आला..! यह बात बडी अलौकिक है, लैया! 'परंतु यह अंतरमें..' जैसे संतुष्ट हो गया कि मैं अष्टाधिस मूलगुण पालता हूं, मैं ब्रह्मचर्य पालता हूं, मुझे रागकी मंदता है, मुझे दुनियाकी दरकार नहीं.

'अंतरमें विकल्पोके साथ अेकत्वबुद्धि तो पडी ही है..' आला..! यह वस्तु है. विकल्प, जो सूक्ष्म विकल्प-राग है, उसके साथ अेकत्वबुद्धि तो पडी है, यह मिथ्यात्व तो पडा है. आला..! 'परंतु यह अंतरमें विकल्पोके साथ अेकत्वबुद्धि तो पडी ही है..' उससे तो भेदज्ञान, परसे भिन्नताका आनंदका अनुभव तो किया नहीं और यहां अटक कर रुक गया. 'उसे क्यों नहीं देખता?' विकल्पकी अेकता टूटती नहीं, जैसा क्यों नहीं देખता? 'विकल्पोके साथ अेकताबुद्धि तो पडी ही है..' बहुत सूक्ष्म अधिकार है. मैं ज्ञायक हूं, मैं शुद्ध हूं, मैं अण्ड हूं, जैसा अंदरमें गहराईमें सूक्ष्म विकल्प उत्पन्न होता है, वह रागकी अेकता भी मिथ्यात्व है. आला..! 'उसे क्यों नहीं देખता?'

'अंतरमें यह शांति क्यों नहीं दिखायी देती?' दो बात की. कौन-सी दो बात? अष्टाधिस मूलगुण पालता है, राग मंद है, बाहरकी सब किया अच्छी करता है, परंतु अंतरमें विकल्प तोडा नहीं. विकल्प और भगवान दोनों भिन्न हैं, उस विकल्पको तो तोडा नहीं. ओहोहो..! और शांति मिली नहीं. आला..! अंतर विकल्प टूटे बिना शांति मिले नहीं प्रभु! और शांति मिले बिना सम्यग्दर्शन होता नहीं. आला..! आज तो माल आया है. प्रभुके घरका यह माल है. बहिन द्वारा यह बात निकल गयी है. आनंदमें रहते लुभे यह बात आ गयी है.

... रुकना, बाह्य किया सब की, परंतु विकल्पके साथ अेकता टूटी नहीं और शांति मिली नहीं. यहां अेकता टूटी नहीं इसलिये आत्माकी शांति मिली नहीं. यह तो देખता नहीं. आला..! चरमसीमाकी बात है, प्रभु! 'अंतरमें यह शांति क्यों नहीं दिखायी देती?' आला..! 'पापभावको त्यागकर...' पापभाव छोडा तो मानो मैंने सर्वस्व कर दिया. आला..! जैसा तो अनंत बार पापभाव छूटा है. नौवीं ग्रेवियेक गया. यह बात तो जैसी लगे कि दुनियाको मालूम नहीं पडे. जैसा मुनिपना, बाह्य आचरण किया व्यवहारकी, सब निरतियार करता था. निरतियार.

भोक्षमार्ग प्रकाशकमें बात है, देव-गुरु-धर्मकी श्रद्धा भी द्रव्यविंगी मिथ्यादृष्टिको

बराबर थी. नौवीं त्रैवेयक गया उसे देव-गुरु-धर्मकी श्रद्धा थी. उसे आत्माकी श्रद्धा नहीं थी. मोक्षमार्ग प्रकाशकमें है. ऐसी किया करके, देव-गुरु-धर्मकी श्रद्धा करके, बालरका आचरण करके नौवीं त्रैवेयक चला गया. परंतु विकल्प टूटना और शांति मिलनी, यह बात रह गया. करना तो ओक ही था. आला..ला..! व्यवहारकी लाज बात आये, व्यवहार आये, व्यवहारके प्रकार तो अनेक हैं, अनेक प्रकार होते हैं, होते हैं, नहीं है ऐसा नहीं, परंतु वह कोई वस्तु नहीं. वह कोई आत्माका साधन नहीं. आला..ला..! व्यवहार बिना निश्चय कलनेमें आता नहीं. ऐसी भाषा आती है. कलनेमें नहीं आता. भेद करना व्यवहार (है). भेद करके समझते हैं. परंतु समझना तो निश्चय है. निश्चय, विकल्परहित है उसे तो पकडा नहीं और अकेले व्यवहारमें रह गया.

‘अंतरमें यह शांति क्यों नहीं दिखायी देती? पापभावको त्यागकर ‘सर्वस्व कर दिया’ मानकर संतुष्ट हो जाता है.’ ऐसा मानकर.. आला..ला..! अपनेमें संतुष्ट (हो जाता है). मैं बहुत करता हूं, मैंने बहुत किया ऐसे संतोष मानता है. ‘सच्चे आत्मार्थीको...’ आला..ला..! ‘सच्चे आत्मार्थीको तथा सम्यक्दृष्टिको तो ‘अभी बहुत बाकी है...’ क्या कहते हैं? द्रव्यविंगी अष्टाईस मूलगुण पावता है, मंद कषाय (हुआ) तो मानो मैंने बहुत किया. यहां तो कहते हैं, समकित्तीको अभी बहुत करना बाकी है, (ऐसा लगता है). वह कहता है, मैंने बहुत किया, अज्ञानभावमें कियाकांडमें. यहां समकित्तीको अभी बहुत बाकी है, (ऐसा लगता है). ओलो..! कहां चारित्र, कहां क्षपकश्रेणि, केवलज्ञान, अभी तो बहुत प्राप्त करना बाकी है. द्रव्यविंगी ऐसी कियाकांडमें मैंने बहुत किया, ऐसा मानकर रुक जाता है. समकित्ती तो, बहुत बाकी है ऐसा जानकर पुरुषार्थ करते हैं. आला..ला..! समझमें आया?

‘अभी बहुत बाकी है,...’ ओलो..लो..! चारित्र-अंदरमें रमना, आनंदमें रमना. आला..ला..! चारित्र यानी चरना, चरना यानी जैसे पशु हरा घास मीठाससे चरते हैं, वीवा कहते हैं? हरा. हरे घासको (चरते हैं). दोंमें ईर्क है. गाय जाती है वह उपर-उपरसे जाती है, उसका मूल नहीं उभासती, मूल नहीं उभासती. गधा जाता है वह मूल उभासकर जाता है, ईसलिये पुनः उगता ही नहीं. यहां तो पुनः उगेगा ऐसी दुनियाकी आशा रभकर उपर-उपरसे जाती है. गोचरी-गोचरी. गायकी चरी यानी उपर-उपरसे जाना. आला..ला..!

मुमुक्षु :- यह तो दृष्टांत हुआ.

समाधान :- यहां यह कहते हैं कि अपनी किया लवे रागादि करे, बाकी अंदर

बहुत करना है. मूल बहुत बाकी है. आला..! उपरसे घास भाया, समकित हुआ, आत्मज्ञान हुआ, चैतन्यका अनुभव हुआ. आला..! यह तो अभी उपरकी बात है. आला..! अभी बहुत बाकी है.

समकितती ऐसा जानते हैं कि अभी तो मुझे बहुत करना है. मेरेमें बहुत कमी है. मैं तो पामर हूँ. स्वामी कार्तिक्यमें श्लोक है, समकितती चारित्रवंत भी केवलज्ञानीके आगे मैं पामर हूँ, ऐसा कहते हैं. ऐसा पाठ है. स्वामी कार्तिक्यमें श्लोक है. केवलज्ञानीके आगे मैं तो पामर हूँ. कहां छद्म गुणस्थान, सातवां गुणस्थान चारित्रदशा! आला..! क्षणमें छद्म-क्षणमें सातवां, क्षणमें छद्म-क्षणमें सातवां. एक दिनमें हजारों बार आवे. व्याख्यान करते-करते सप्तम आ जाय, विहारमें चलते-चलते सप्तम हो जाय, जाते-जाते सप्तम हो जाय. आला..! अंदर अप्रमत्त दशामें आ जाय. बाहर लोगोंको दिखे नहीं कि यह किया तो चलती है. अंदर ही अंदर आनंदमें चले गये हैं.

यहां कहते हैं, 'सम्यक्दृष्टिको तो अभी बहुत बाकी है...' (द्रव्यविंगी मुनि) अष्टाईस मूलगुण पालता है और कहता है कि मैंने बहुत किया और समकितकी (लगता है) बहुत बाकी है. आला..! 'बहुत बाकी है, इस प्रकार पूर्णता तक बहुत बाकी है...' आला..! सम्यक्दृष्टि अनुभव करके जानते हैं, अभी मुझे पूर्णता तक बहुत करना बाकी है. आला..! मिथ्यादृष्टि अष्टाईस मूलगुण और बाह्य क्रियाकांड करके मान लेता है कि मैंने बहुत किया. इतना इर्क है. आला..! 'ऐसी ही भावना रहती है...' धर्मीशुक्ली, मुझे पूर्णता तक बहुत बाकी है, ऐसी ही भावना रहती है. आला..! उसका गर्व और अभिमान नहीं होता. मुझे तो अभी बहुत बाकी है. आला..! चारित्र है, केवलज्ञान. आला..! यह तो पामर दशा है. स्वामी कार्तिक्यमें ऐसा पाठ है, मैं पामर हूँ. समकितती ऐसा मानते हैं कि मैं पर्यायमें पामर हूँ. द्रव्यमें प्रभु हूँ. द्रव्य भगवान है. पर्यायमें मैं पामर हूँ, ऐसा पाठ है. आला..! मुझे बहुत करना बाकी है. आला..! मैं किसका अभिमान करुं? मैंने क्या किया कि उसका मैं संतोष ले लूं? मुझे बहुत करना बाकी है. आला..! 'ऐसी ही भावना रहती है और तभी पुरुषार्थ अर्जुन रह पाता है.' तभी पुरुषार्थ स्वभाव सन्मुख अर्जुन रहता है. मुझे बहुत करना बाकी है, ऐसी दृष्टि रहती है उसका पुरुषार्थ स्वभावकी ओर चलता ही है. 'तभी पुरुषार्थ अर्जुन रह पाता है.' आला..!

अरे..! यह तो अनुभवकी भाषा कैसी! उन्हें मालूम नहीं था कि कोई विषय लेता है. उन्हें बाहर प्रसिद्धिमें आनेका, विषयनेका बिलकूल नहीं है. धर्मरत्न है, भगवतीस्वरूप है, भगवती माता है. आला..! ओहोहो..! अंदरमेंसे यह बोले हैं.

‘तभी पुरुषार्थ अंजं रल पाता है.’ तभी (यानी) कब? मुझे सम्यग्दर्शन लुआ परंतु करना बलुत बाकी है. अैसी जे मान्यता रलती है, तभी पुरुषार्थ अंजं रल पाता है. तो पुरुषार्थ अंजं रले. आलाला..!

‘गृलस्थाश्रममें सम्यक्त्वीने मूलको पकड लिया है.’ समकित्तीने मूलको पकड लिया है. आत्मद्रव्य जे मूल वस्तु अंजंजानंद प्रभु, पूरुणानंदका नाथ मलासत्ता जिसमें आवरलुकी गंध नहीं, आलाला..! जिसमें अल्पता नहीं, आवरलु नहीं, अशुद्धता नहीं, मंदता नहीं आलाला..! जिसमें विपरीतता नहीं, अैसा चैतन्यपिंड प्रभु,.. आलाला..! अैसे मूलको पकड लिया. समकित्तीने मूलको पकड लिया. यह मूल. आलाला..! व्यवलारकी बात लोगोंको अच्छी लगे. क्यौंकि किया है और करते हैं. उसमें करना क्या है? शरीरकी किया और बालरकी... निश्चयकी बात अंदर सूक्ष्म पडे. थोडी कडक लगे. भगवान! तेरे पुरुषार्थकी कमी नहीं है, नाथ! तेरेमें तो अनंत पुरुषार्थ पडा है न, प्रभु!

... जे किया उसके सिवा भी बाकी है. सादी भाषामें कुदरती आ गया है. वे तो लिभे नहीं, बोले नहीं. ... ‘(दृष्टि अपेक्षासे) सब कुछ कर लिया है,...’ गृलस्थाश्रममें सम्यग्दर्शन लोता है. दृष्टि अपेक्षासे सब कुछ कर लिया है. ‘अस्थिरताइप शाभाअें-पत्ते जरूर सूभ जायेंगे.’ आलाला..! भगवान आत्माको (ग्रललु किया), अतीन्द्रिय आनंदका दल, अतीन्द्रिय यमत्कारिक चैतन्यरत्नका भंडार भगवान, उसे पकड लिया, उसमेंसे सब आयेगा. अस्थिरता बाकी है. है? ‘अस्थिरताइप शाभाअें-पत्ते जरूर सूभ जायेंगे.’ जिसने मूल पकडा है, उसे यह जरूर सूभ जायेगा. आलाला..! आगममें अैसा लिभते हैं, आभिरके अंतर्मुलूर्तमें लजरो बार छटा-सातवां आता है, अैसा पाठ है. आभिरके अंतर्मुलूर्तमें लजरो बार छटा-सातवां, छटा-सातवां, उसमें अेकदम अंदर लीन लो जाते हैं, केवलज्ञान प्राप्त करते हैं. अंदर शक्तिमें सब भंडार भरा है. यही शक्ति ज्ञान सामर्थ्य. आलाला..! ज्ञानका सत्त्व, आनंदका सत्त्व उसमें सब भरा है. कभी देजा नहीं, कभी सुना नहीं. परमात्मा अंदर रल गया. बालरकी पामरताकी गिनतीमें प्रभुता मान ली. पामरताकी परिणति-पर्यायमें प्रभुता मान ली, प्रभु अेक ओर बाकी रल गया. आलाला..! मुद्देकी रकम यह है. बातचीत करनेमें कल भी सार आया था. कल भी सबेरे मूल बात आयी थी.

मुमुक्षु :- आपसे ली सुन रहे हैं.

उत्तर :- यहां तो किसीने कल कागज रजा था कि यह बोल पढना. किसीका है, लमे क्या, अैसे पढेंगे. शिक्षलु शिबिरमें बलिनश्रीके वचनलमृत यह-यह पढना.

किसीने लिखा है. भले जिसने भी लिखा हो. हमें यह सुननेका भाव है. आत्मा है, कोई भी आत्मा है.

यहां कहते हैं, जिसने आत्माका मूल पकड़ लिया, उसके पत्ते, झूल, झूल सूझ जायेंगे, रहेंगे नहीं. उसको चारित्र और केवलज्ञान हो जायगा. आलाहा..! 'द्रव्यविंगी साधुने मूलको ही नहीं पकड़ा है;...' आलाहा! चैतन्यगुणका भंडार प्रभु अरूपी निर्विकल्प आनंदका कंद, सच्चिदानंद, सत् नित्य रहनेवाली यीज ज्ञान और आनंदका कंद प्रभु, वह तो मलाहल है. अतीन्द्रिय आनंदका हल है, उसको पकड़ा नहीं. द्रव्यविंगीने साधुने मूलको ही पकड़ा नहीं. आलाहा..! ऐसी बात भी कम हो गयी है. साधारण प्राणी तो बेचारे अक घंटा सुनने आये, भुश हो जाय. 'मूलको ही नहीं पकड़ा है; उसने कुछ किया ही नहीं.' आलाहा..! द्रव्यविंगीने आत्मद्रव्यको निर्विकल्पको पकड़ा ही नहीं तो उसने कुछ किया ही नहीं. और समकितने मूलको पकड़ा है तो सब पीछेका चारित्रका दोष आदि है वह सब नाश हो जायगा. आलाहा..!

ऋषभदेव भगवान. तीन ज्ञान, क्षायिक समकित. फिर भी गृहस्थाश्रममें ८३ वाज्य पूर्व रहें. ऋषभदेव भगवान. ८३ वाज्य पूर्व. अक पूर्वमें छप्पन कोड सत्तर कोड छप्पन वाज्य वर्ष. एतने तो वर्ष है. सत्तर वाज्य छप्पन कोड (वर्ष) अक पूर्वमें. जैसे ८३ वाज्य पूर्व मुनिपनाके बिना रहे. आलाहा..! चारित्रकी कितनी किमत होगी! आलाहा..! तीन ज्ञान तो लेकर आये थे, समकित तो था. कालकी अनुकूलता थी, उसमें भी एतना काल निकालना पडा. आलाहा..! ८३ वाज्य पूर्वके बाद चारित्र आया. परंतु सम्यग्दर्शन है तो आये बिना रहे ही नहीं.

'बाह्यदृष्टि लोगोंको ऐसा भले ही लगे...' बाह्यदृष्टि लोगोंको बाह्य त्याग देभकर.. आलाहा..! 'बाह्यदृष्टि लोगोंको ऐसा भले ही लगे कि 'सम्यक्त्वीको अभी बहुत बाकी है...' लोग बहुत आये हैं. 'द्रव्यविंगी साधुने मूलको ही नहीं पकड़ा है; उसने कुछ किया ही नहीं. बाह्यदृष्टि लोगोंको जैसे भले ही लगे...' ऐसा लगे, आलाहा..! बहुत किया. 'सम्यग्दृष्टिको अभी बहुत बाकी है और द्रव्यविंगी मुनिने बहुत कर लिया.' ऐसा मानकर संसार पोसते हैं. आलाहा..! 'द्रव्यविंगी मुनिने बहुत कर लिया; परंतु ऐसा नहीं है. परिषद सलन करे परंतु किन्तु अंतरमें कर्तृत्वबुद्धि नहीं टूटी,...' भगवान! सम्यग्दर्शन हुआ बिना रागके कर्तृत्वकी बुद्धि छूटती नहीं. मैं रागका कर्ता हूं और राग मेरा कार्य है, ऐसी मिथ्याबुद्धि छूटती नहीं. समकित बिना गहराईमें उसकी कर्ताबुद्धि रहती है. आलाहा..!

सम्यग्दर्शनमें आत्मज्ञान हुआ तो रागकी क्रियाका कर्ता और मेरा कार्य, ऐसा

रहता नहीं। वह तो रागका ज्ञाता रहता है। ज्ञाननेकी पर्याय भी अपनी ताकतसे अपनेसे उत्पन्न हुयी है। राग आया तो उससे रागका ज्ञान हुआ, जैसा भी नहीं है। अपनेमें ही अपनी स्वपरप्रकाशक ज्ञानकी पर्याय प्रगट होती है। आह्लाहा..! अज्ञानीको द्रव्यविंगमें सूक्ष्म विकल्प क्या थीज है अंदर, उससे कैसे छूटना, उसकी भबर नहीं। आह्लाहा..! अंदर सूक्ष्म विकल्प क्या है और उस विकल्पमें मेरी अेकत्वबुद्धि कहां है, यह मिथ्यादृष्टिको द्रव्यविंगीको अंदर सूझ-बूझ होती नहीं। सूझ-बूझ होती नहीं। आह्लाहा..! बात अच्छी आयी है।

‘परिषद सहन करे किन्तु अंतरमें कर्तृत्वबुद्धि नहीं टूटी,...’ अंतर सम्यग्दर्शन बिना कर्ताबुद्धि कभी छूटती नहीं। क्या कला?

करे करम सो ही करतारा, जे ज्ञाने सो ज्ञाननहारा,

कर्ता सो ज्ञाने नहीं कोर, ज्ञाने सो कर्ता नहीं कोर। समयसार नाटक। आह्लाहा..!

कर्ताबुद्धि अंदर पडी है। ज्ञायक स्वभाव भगवान मलाप्रभु भगवंत, उसकी ओर झुका नहीं... आह्लाहा..! तो रागकी बुद्धि-कर्ताबुद्धि छूटी नहीं। कर्ताबुद्धि छूटी नहीं तो मिथ्यात्व छूटा नहीं और मिथ्यात्वका पोषण होता रहा। क्योंकि रागका कर्ता होता है तो मिथ्यात्वका पोषण साथमें रहता है। आह्लाहा..! गजब बात है, प्रभु! जबतक रागकी कर्ताबुद्धि है तबतक मिथ्यात्वका पोषण चलता रहता है। आह्लाहा..! और सम्यग्दर्शनमें रागकी बुद्धि-कर्ताबुद्धि छूट जाती है और अकर्ताबुद्धिमें पुष्टि होती है। राग आता है, लडाई भी होती है, परंतु उसका स्वामी नहीं होता। उस वक्त भी अपने ध्रुव ध्येयका ध्यान हटता नहीं। ध्रुव पर दृष्टि पडी है, वह हटती नहीं। भसती नहीं, हमारी काठियावाडी भाषा है। आह्लाहा..! बहुत अच्छी बात आयी। आह्लाहा..!

‘अंतरमें कर्तृत्वबुद्धि नहीं टूटी, आकुलताका वेदन होता है,...’ इसकी उसको भबर नहीं है। मैं धर्मी कहलाता हूं, परंतु आकुलता तो अंदर है, शांति तो आयी नहीं। आह्लाहा..! अंतरमें अतीन्द्रिय आनंदका व्यक्तपना-प्रगटपना (है नहीं)। शक्ति तो भगवान आनंदकी पूरी पडी ही है। उसकी व्यक्तताका अंश तो आया नहीं। आह्लाहा..! इसलिये कर्तृत्वबुद्धि नहीं छूटी। आकुलताका वेदन होता है। आह्लाहा..! जैसी किया करे फिर भी अंतरमें तो आकुलता है। क्योंकि आनंदका स्पर्श हुआ नहीं तो कर्ताबुद्धि छूटी नहीं। आह्लाहा..! ‘उसने कुछ किया ही नहीं.’ उसने कुछ किया ही नहीं। जहां कर्तृत्वबुद्धि छूटी नहीं, आकुलता छूटी नहीं, उसने कुछ किया ही नहीं। सूक्ष्मरूपसे अंदरमें-अंदरमें रागकी आकुलता बहुत सूक्ष्म, उसकी अेकताबुद्धि

छूटी नहीं. इसलिये अंदरमेंसे शांति, आत्मामें जो शांति है उस शांतिका ऊरना तो आया नहीं. शांतिका ऊरनाका वेदन है नहीं और कर्ताबुद्धि छूटी नहीं, इसलिये आकुलता रहती है. इतना त्याग करे, एजरो रानी छोडे, फिर भी अंदरमें आकुलता रहती है.

समकृती ८६ एजरो स्त्रियोंके साथ शादी करे. भरतेश वैभवमें लेज है. भरतेश वैभव है न? भरत एमेशा सेंकडो स्त्रियोंसे शादी करते थे. बाहर निकलते थे, वहां राजा-रानी अपनी लडकियोंको (शादीके लिये लाते थे). अक दिनमें सेंकडो शादियां करते थे. ८६ एजरो. फिर भी समकृती, क्षायिक समकृती आनंदमें रहते हैं. अरेरे..! रागके अभावस्वभावस्वरूप भगवान और रागका सदृभावस्वरूप आकुलता, दोनोंकी भिन्नता भासी नहीं, तबतक कुछ किया नहीं. आह्ला..! रागकी सूक्ष्म आकुलता और आत्मा अनाकुल आनंदकंद, इन दोनोंकी सूक्ष्म भिन्नता भासित नहीं होती, तबतक अंतरमें कोई (कल्याण) होता नहीं. बाहरसे भवे माने, लोग भी माने कि इसने बहुत किया, उसने यह त्याग किया और उसने यह किया. उसने कुछ किया ही नहीं. १८८ (पूरा हुआ).

शुद्धनयकी अनुभूति अर्थात् शुद्धनयके विषयभूत अजडस्पृष्टादिस्वरूप शुद्ध आत्माकी अनुभूति सो संपूर्ण जिनशासनकी अनुभूति है. यौदह ब्रह्मांडके भाव उसमें आ गये. मोक्षमार्ग, केवलज्ञान, मोक्ष इत्यादि सब ज्ञान लिया. 'सर्वगुणांश सो सम्यक्त्व'-अनंत गुणोंका अंश प्रगट हुआ; समस्त लोकांशका स्वरूप ज्ञात हो गया.

जिस मार्गसे यह सम्यक्त्व हुआ उसी मार्गसे मुनिपना और केवलज्ञान होगा-ऐसा ज्ञात हो गया. पूर्णताके लक्ष्यसे प्रारंभ हुआ; इसी मार्गसे देशविरतिपना, मुनिपना, पूर्ण चारित्र्य एवं केवलज्ञान-सब प्रगट होगा.

नमूना देजनेसे पूरे मालका पता चल जाता है. दूजके चंद्रकी कला द्वारा पूरे चंद्रका ज्वाल आ जाता है, गुडकी अक डलीमें पूरी गुडकी पारीका पता लग जाता है. वहां (दृष्टांतमें) तो भिन्न-भिन्न द्रव्य हैं और यह तो अक ही द्रव्य है. इसलिये सम्यक्त्वमें यौदह ब्रह्मांडके भाव आ गये. इसी मार्गसे केवलज्ञान होगा. जिस प्रकार अंश प्रगट हुआ उसी प्रकार पूर्णता प्रगट होगी. इसलिये शुद्धनयकी अनुभूति अर्थात् शुद्ध आत्माकी अनुभूति वह संपूर्ण जिनशासनकी अनुभूति है. २००.

‘શુદ્ધનયકી અનુભૂતિ...’ આહાહા..! ‘શુદ્ધનયકે વિષયભૂત અબદ્ધસ્પૃષ્ટાદિરૂપ...’
ક્યા કલંતે હૈં? શુદ્ધનયકી અનુભૂતિ-સમ્યઞ્ઢર્શન. ‘શુદ્ધનયકે વિષયભૂત અબદ્ધસ્પૃષ્ટાદિરૂપ...’
જો ૧૪-૧૫ ગાથામૈં સમયસારમૈં (આયા).

જો પસ્સદિ અપ્પાણં અબદ્ધપુઢ્ઢં અણણયં ણિયદં।

અવિસેસમસંજુત્તં તં સુદ્ધણયં વિયાણીહિ।।૧૪।।

૧૫વી મૈં ઐસા આયા હૈ,

જો પસ્સદિ અપ્પાણં અબદ્ધપુઢ્ઢં અણણમવિસેસં।

અપદેસસંતમજ્ઞં પસ્સદિ જિણસાસણં સવ્વં।।૧૫।।

અર્થાત્ અખંડ વસ્તુ, ઉસકા જો કથન હૈ શાસ્ત્રમૈં, વહ ... ક્યા કહા?
જયસેનાચાર્યદેવકી ટીકામૈં ‘અપદેસ’કા અર્થ .. ક્રિયા હૈ. ... ‘અપદેસ’કા અર્થ અખંડ.
... (અવાજ ખરાબ છે). અંદર શાંતિ, વીતરાગતા આતી હૈ વહ ભાવશ્રુત હૈ. કહા
થા વહ. વહ કરના. શુદ્ધ આત્માકી અનુભૂતિ, ઉસકા વિષય તો અબદ્ધસ્પૃષ્ટાદિરૂપ
(શુદ્ધ આત્મા હૈ). વિશેષ કહૈંગે... (શ્રોતા :- પ્રમાણ વચન ગુરુદેવ!)